IJARSCT
ISSN: 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Volume 6, Issue 10, June 2026
Impact Factor: 8.2

नई शिक्षा नीति के आलोक में भारतीय ज्ञान परम्परा और विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास :'संस्कार संपन्न-विद्यालय मॉडल' (SESM) का एक अध्ययन

भास्कर शुक्ला
शोधार्थी
शिक्षक शिक्षा विभाग
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय

अल्पना सिंह
शोधार्थी
शिक्षक शिक्षा विभाग
जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय

सारांश

भारतीय शिक्षा का मौलिक उद्देश्य सिर्फ किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थी के शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक समग्र विकास तक फैला होता है। देश की भारतीय ज्ञान परम्परा प्राचीन काल से शिक्षा को जीवन-निर्धारण कला के रूप में देखती आई है, जहाँ सत्य, धर्म, करुणा और अहिंसा जैसे नैतिक मूल्यों को भी उच्चता दी जाती है। वर्ष 2020 में लागू हुई राष्ट्रीय शिक्षा नीति इन प्राचीन मूल्यों तथा आधुनिक नवाचारों के बीच सेतु बनाने का प्रयास है। **NEP** 2020 पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणालियों को शिक्षा के मुख्यधारा में शामिल करने को एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर मानती है। प्रस्तुत शोध में वैश्विक सफल विद्यालयी नवाचारों जैसे जापान की सामूहिक टिफिन प्रणाली, फिनलैंड का निःशुल्क पोषक भोजन, और सिंगापुर की समग्र शिक्षा नीतियाँ को देखते हुए एक नया संस्कार-संपन्न विद्यालय मॉडल **(SESM)** बताया गया है। **SESM** मॉडल पाँच स्तंभों पर आधारित है: सामूहिक भोजन, सेवा-आधिगम, छात्र नेतृत्व, श्रम-उत्तरदायित्व, और परिवार-विद्यालय सहभागिता। इस ढांचे में प्रत्येक स्तंभ विद्यार्थियों के नैतिक, आत्मिक एवं व्यावहारिक कौशलों के विकास को लक्षित करता है। अध्ययन से पता चलता है कि जब विद्यालयों में संस्कारात्मक गतिविधियाँ समन्वित रूप से लागू की जाती हैं, तो छात्र के सर्वांगीण विकास, आत्मविश्वास और समाजिक चेतना में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

DOI: 10.48175/IJARSCT-37244

प्रस्तावना

स्वतंत्रता से पहले भारत की शिक्षा व्यवस्था पर औपनिवेशिक प्रभाव रहा, जिससे सांस्कृतिक मूल्यों की विस्थापना हुई थी। आज **NEP 2020** इसी व्यवस्था को पुनर्संस्कारित करने और भारतीय परम्पराओं के साथ पुनः जुड़ने का संकल्प लेती है। नीति में शिक्षा को लचीली, बहुविषयक और अनुभवआधारित- बनाने पर जोर दिया गया है। इसका मानना है कि जब तक शिक्षा अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ी नहीं होगी, उसका असर सीमित रहेगा। कोठारी आयोग ने पहले ही स्पष्ट किया था कि शैक्षणिक प्रगति के लिए सुविचारित शिक्षा नीति आवश्यक है (Siddharthan, 2022) ।

परंपरा के आलोक में शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा उत्तीर्ण करना नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और आत्मग्रन्थों में ज्ञान को-विकास है। पूर्वी शिक्षा- जीवन जीने की कला माना गया है, जिसमें विषयगत ज्ञान के साथ साथ अहिंसा, सहिष्णुता, सेवा और समर्पण जैसे नैतिक संस्कार दिए जाते रहे। आधुनिक समय में विज्ञान और तकनीक की प्रगति ने शिक्षा को तेजी से बदल दिया है, परन्तु सफलता के साथ साथ नैतिक पतन की चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। इसलिए-सर्वांगीण विकास की अवधारणा विशेष महत्व रखती है, जिससे युवा सिर्फ ज्ञानवान ही नहीं, बल्कि संस्कारवान, जिम्मेदार और समाज के प्रति संवेदनशील बनें (पाण्डेय, अक्टूबर-दिसंबर 2025)।

भारतीय ज्ञान परम्परा का महत्व

भारत को सदियों से ज्ञानभूमि कहा गया है। प्राचीन काल में नालंदा, तक्षशिला, नागार्जुन विश्वविद्यालय जैसे संस्थान न केवल भारतीयों बल्कि दूर-दूर से आए छात्रों के लिए विद्या के केंद्र रहे। यहाँ दर्शन, गणित, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद, कला-साहित्य सहित अनेक क्षेत्रों में अध्ययन होता था। इन विश्वविद्यालयों में गहन अध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा भी दी जाती थी। उदाहरणतः आयुर्वेद में 'धातु, धात्री, धातुराशि' के सिद्धांतों से शरीर, पोषण एवं पर्यावरण संबंधी ज्ञान सिखाया जाता था। महर्षि पतंजलि ने योगसाधना में चरित्र-संस्कार को वर्णित किया, महानतम किन्तु व्यक्तिगत विकास पर बल दिया। कालान्तर में ये संस्कार गुरुकुल प्रणालियों से विद्याका शिक्षा-शिष्य परम्परा में विद्या देते समय पवित्र आचरण-अविभाज्य हिस्सा रहे। उदाहरण के लिए गुरु, वेदों के यज्ञ आदि संस्कार अनिवार्य माने जाते थे। **NEP 2020** के अनुसार, जब शिक्षा अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ी होती है, तभी वह प्रभावी और दीर्घकालिक होती है। अतः भारतीय ज्ञान

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 10, June 2026 Impact Factor: 8.2

परम्परा से शिक्षा में नैतिक मूल्य-आधारित पाठ्यक्रम समावेश नेशनल एजेंडा का प्रमुख अंग है (गुप्ता, आयुष, और जितेंद्र प्रताप, फरवरी 2026)।

विश्व के सफल विद्यालयी नवाचार

विश्व के अनेक विकसित देशों ने अपने स्कूलों में पारंपरिक पाठ्यक्रम के साथ साथ नवाचारात्मक गतिविधियाँ जोड़ी हैं, जिनसे बालकों में नेतृत्व, सहयोग, सेवाविश्वास जैसे गुण -भाव और आत्म-विकसित हुए हैं। इन नवाचारों का उद्देश्य भी केवल अकादमिक प्रगति नहीं, बल्कि सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करना है। कुछ उदाहरण:

जापान का सामूहिक भोजन एवं शोकुईकू: जापान में 'शोकुईकू' नीति के तहत स्कूल लंच को एक "जीवंत पाठ्यपुस्तक" माना जाता है। प्रत्येक दिन विद्यार्थी कक्षा में मिलकर भोजन करते हैं, बर्तन परोसते हैं और स्वयं सफाई में हिस्सा लेते हैं। इस प्रक्रिया से उन्हें कृतज्ञता, समर्पण और सहयोग की भावनाएँ विकसित होती हैं। जापान में **99%** से अधिक सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में यह प्रणाली लागू है। **GCNF** के अनुसार बच्चों को अपना भोजन परोसने और सफाई करने से "खाना पकाने और पारंपरिक खाद्य संस्कृति के प्रति सम्मान" बढ़ता है। जापानी विद्यालयों में माहवार अंतर्राष्ट्रीय भोजन दिवस भी मनाया जाता है, जिससे वैश्विक संस्कृति की समझ बढ़ती है। "जब छात्र कक्षा को खाने की मेज की तरह व्यवस्थित करते हैं, एकदूसरे की सेवा करते हैं-, तो उनमें आपसी सहयोग और नैतिक जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है ((GCNF), 2024)।

फिनलैंड का निःशुल्क पोषक भोजन: फिनलैंड में **1948** से ही सभी छात्रों को निशुल्क पौष्टिक भोजन उपलब्ध है। स्कूली भोजन छात्रों की दैनिक पोषण आवश्यकता का लगभग एकतिहाई पूरा - करता है। यह कार्यक्रम स्वास्थ्य ही नहीं, सामाजिक शिक्षा का भी हिस्सा है। भोजन को स्थानीय, ताजे और जैविक घटकों से तैयार किया जाता है। विद्यार्थी एक साथ बैठकर खाते हैं, जिससे बातचीत और सामाजिक शिक्षा को बढ़ावा मिलता है। भोजन के दौरान वे मेज की शिष्टता, सांस्कृतिक महत्व और सहयोग सीखते हैं। साथ ही फिनलैंड के स्कूल किचन में खाना बनाना भी पाठ्यक्रम का अंग है, जिससे बच्चों को पाकशास्त्र और पोषण की जानकारी मिलती है। राष्ट्रीय एजेंसी ऑफ एजुकेशन के अनुसार **83%** विद्यार्थी अपने भोजन से संतुष्ट हैं, जो कार्यक्रम की सफलता का प्रमाण है (Finland, 2021)।

सिंगापुर का समग्र शिक्षा नीति: सिंगापुर ने हाल के वर्षों में शिक्षा को केवल अकादमिक प्रदर्शन तक सीमित न रखकर चरित्र निर्माण, सामाजिक सहभागिता और आत्म-अभिव्यक्ति पर बल दिया है। यहाँ **Character and Citizenship Education (CCE)** नामक पाठ्यक्रम द्वारा ज्ञान, कौशल, मूल्य और दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से पढ़ाया जाता है। सरकार ने छात्र-स्वास्थ्य, सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा तथा अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम लागू किए हैं, जिससे विद्यार्थी सहानुभूति, नेतृत्व और जीवन कौशल सीखते हैं। उदाहरण के लिए, **CCE** के अंतर्गत नैतिक कथाएं, लीडरशिप के व्यावहारिक पाठ और सांस्कृतिक विविधता पर चर्चा होती है। सिंगापुर का अनुभव दर्शाता है कि सबक पढ़ाने की पद्धति पर जोर देने से विद्यार्थी न केवल जिज्ञासु बनते हैं, बल्कि समाज के जागरूक नागरिक भी बनते हैं (Prasad, 2025)।

मॉन्टेसरी और वाल्डोर्फ मॉडल: ये दोनों शिक्षा पद्धतियाँ बाल-केंद्रित दृष्टि रखती हैं। मॉन्टेसरी शिक्षा में बच्चे स्वायत्त रूप से व्यावहारिक जीवन कौशल (जैसे साफ-सफाई, खाना बनाना) सीखते हैं। वाल्डोर्फ शिक्षण में रचनात्मक कला, संगीत और कहानी के माध्यम से सम्पूर्ण विकास की शिक्षा दी जाती है। इन मॉडल्स में शिक्षक मार्गदर्शक होते हैं और कक्षा को एक सह-निर्माण स्थान बनाते हैं। शोध बताते हैं कि मॉन्टेसरी छात्रों में रचनात्मक सोच और समस्या समाधान कौशल परंपरागत शिक्षा की तुलना में अधिक होता है। वाल्डोर्फ स्कूलों में सामाजिक भावनात्मक विकास पर विशेष ध्यान रहता है (हसन, 2023)। इन उदहारणों से स्पष्ट होता है कि शिक्षार्थियों में सेवा, नेतृत्व, सहयोग और आत्मविश्वास जैसे गुण विकसित करने के लिए अकादमिक पाठ्यक्रमों के साथ व्यावहारिक, सामुदायिक और संस्कारात्मक गतिविधियाँ अनिवार्य हैं। इन नवाचारों को आधार मानकर अपने **SESM** मॉडल को आगे प्रस्तावित करते हैं।

संस्कार-संपन्न विद्यालय मॉडल (SESM) के मुख्य स्तंभ

प्रस्तावित संस्कार-संपन्न विद्यालय मॉडल पाँच स्तंभों पर आधारित है, जो **NEP** 2020 के सर्वांगीण विकास लक्ष्य को पूरा करने के लिए तैयार किए गए हैं। प्रत्येक स्तंभ शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक विकास के अभिन्न अंगों को सम्मिलित करता है:

स्तंभ 1: सामूहिक भोजन

सामूहिक भोजन की अवधारणा शिक्षा के साथ नैतिक शिक्षा को जोड़ती है। इस व्यवस्था के तहत सप्ताह में निर्धारित दिन सभी कक्षा एक साथ अपने टिफिन साझा करते हैं या एक-दूसरे को भोजन परोसते हैं। इससे "मेरा-तुम्हारा" की भावना मिटती है और बच्चों में समता, सेवा भाव और कृतज्ञता का विकास होता है। जापान की टिफिन प्रणाली ने दिखाया है कि छात्र भोजन तैयार करने, परोसने और सफाई में भाग लेकर स्वयं की जिम्मेदारियाँ सीखते हैं। फिनलैंड की तरह हम भी भोजन को सामाजिक शिक्षा का अवसर बना सकते हैं। उदाहरणतः छात्र एक ही डाइनिंग टेबल पर बैठकर भोजन करते हुए बातचीत करें, भोजन सामग्री पर चर्चा करें और मेज की साफ-सफाई स्वयं मिलकर करें। इस अभ्यास से न सिर्फ पोषण पर ध्यान जाएगा, बल्कि बच्चों में सामाजिक मेलजोड़ और पर्यावरणीय समझ भी आएगी ((GCNF), 2024)।

स्तंभ 2: सेवा-अधिगम

भारतीय संस्कृति में सेवा को सर्वोत्तम धर्म माना गया है। सेवा अधिगम-के अंतर्गत विद्यार्थी कक्षा के परे जाकर समाज सेवा से जुड़ी गतिविधियाँ करते हैं। उदाहरण स्वरूप, 'सेवा सप्ताह' के दौरान वृद्धाश्रम या अनाथालय की यात्रा, 'एक पौधा एक विद्यार्थी' पहल, या स्वच्छता अभियान आयोजित किया जा सकता है। ऐसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों को सहानुभूति, करुणा और सामाजिक दायित्व का बोध कराती हैं। शोध बताते हैं कि सेवाआधारित शिक्षा से छात्रों में नेतृत्व गुण-, सहयोग और नागरिक जिम्मेदारी विकसित होती है। नेशनल युथ लीडरशिप काउंसिल के अनुसार "सद्गुणमय सेवा-आधिगम युवा प्रतिभाओं को अपने समुदाय की समस्याओं के समाधान से जोड़ता है, जिससे सहानुभूति, नेतृत्व और सामुदायिक चेतना बढ़ती है"। **SESM** में ऐसे विद्यालय कार्यक्रम होंगे जहाँ विद्यार्थी स्वयं की सीख को वास्तविक सामाजिक जरूरतों से जोड़ें, उदाहरणार्थ नदी तट से कचरा हटाना या गरीबों को भोजन वितरण। इससे शिक्षण केवल शास्त्र ही नहीं, बल्कि व्यवहारिक नैतिक शिक्षा भी बन जाती है।

स्तंभ 3: छात्र नेतृत्व

छात्रों को अपने सीखने और विद्यालय के निर्णयों में सक्रिय भागीदार बनाने के लिए नेतृत्व संबंधी गतिविधियाँ आवश्यक हैं। **SESM** में प्रत्येक कक्षा या विद्यालय में 'छात्र संसद' जैसी संरचना हो सकती है, जहां छात्र विभिन्न समितियों (जैसे स्वास्थ्य, संस्कृति, पर्यावरण) का नेतृत्व संभालें।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 10, June 2026 Impact Factor: 8.2

इसके अतिरिक्त 'एक दिन शिक्षक मैं' कार्यक्रम में विद्यार्थी शिक्षक की भूमिका निभाकर आत्मविश्वास विकसित करते हैं। अध्ययन बताते हैं कि जब बच्चे नेतृत्व की भूमिकाएँ निभाते हैं, तो उनमें संचार कौशल, निर्णय क्षमता और आत्म-सम्मान बढ़ता है। सह शिक्षा प्राधिकरण ने भी अनुभव किया है कि **U-Shape** (घेर) कक्षा व्यवस्था से हर विद्यार्थी शिक्षक की बात सुन सकता है और सहभागी बनता है, जिससे कोई बैकबेंचर नहीं बनता। आधुनिक स्कूल कई स्तरों पर छात्र नेतृत्व को बढ़ावा दे रहे हैं, उदाहरणतः प्रार्थना सभा, सांस्कृतिक कार्यक्रम या खेल आयोजनों में प्रधान मंच का संचालन छात्रों को सौंपना। इन अनुभवों से बच्चे लॉजिक, लोकतंत्र की समझ और सर्वसमावेशी चिंतन सीखते हैं।

स्तंभ 4: श्रम एवं उत्तरदायित्व

बालकों में श्रम की गरिमा और आत्म-निर्भरता की भावना जगाने के लिए विद्यालय में श्रम संबंधी आदतें जरूरी हैं। जापान की स्वयं-सफाई प्रणाली से प्रेरित होकर, हमारे स्कूलों में भी विद्यार्थी स्वयं अपने कक्षाओं की सफाई और पौध-रोपण जैसी गतिविधियाँ कर सकते हैं। यह न केवल स्वच्छता के प्रति जिम्मेदारी सिखाता है, बल्कि श्रम का आदर भी उत्पन्न करता है। इसके साथ ही **SESM** में 'स्किल शनिवार' नामक पहल हो सकती है, जिसमें हफ्ते में एक दिन सिलाई, बागवानी, प्राथमिक चिकित्सा, वित्तीय साक्षरता आदि व्यावहारिक कौशल सिखाए जाएँ। ऐसे कौशल कार्यक्रम बच्चों को रचनात्मक बनाते हैं और भविष्य में आत्मनिर्भरता की नींव रखते हैं। उदाहरणतः एक प्रोजेक्ट के तहत बच्चे अपने स्कूल कैंटीन के लिए हर्बल गार्डन विकसित कर सकते हैं, इससे उन्हें विज्ञान के साथ प्रकृति का ज्ञान भी मिलेगा। कुल मिलाकर ये पहलें **NEP** 2020 के "कौशल विकास" लक्ष्यों को स्कूल स्तर पर आत्मसात करने में सहायक होंगी।

स्तंभ 5: परिवार-विद्यालय सहभागिता

भारतीय संस्कृति में परिवार को सामाजिक विकास का पहला गुरुकुल माना गया है। **SESM** विद्यालय-परिवार संबंध को मजबूत बनाकर बच्चे के बहुआयामी विकास में योगदान देगा। उदाहरण स्वरूप, 'दादा-दादी संवाद दिवस' में छात्र अपने घर के बुजुर्गों से उनके जीवन का साक्षात्कार लें; इससे इतिहास, लोककथाएँ और पारिवारिक मूल्य बच्चों को मिलेंगे। 'खुशहाल माता-पिता कार्यक्रम' में महीने में एक बार अभिभावक-छात्र संवादी गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं, जैसे मिलकर विज्ञान प्रोजेक्ट बनाना या सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेना। **CBSE** ने भी **NEP** के

अंतर्गत 'पेरेंटिंग कैलेंडर' जारी किया है, जिसका उद्देश्य स्कूलों और अभिभावकों के बीच संरचित संवाद स्थापित करके बच्चों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना है। इस कैलेंडर से पता चलता है कि सत्र 2026-27 में परिवार-विद्यालय सहभागिता बढ़ाकर "विषयों पर मात-पिता को छात्रों के विकास में एकीकृत रूप से शामिल" करने का लक्ष्य रखा गया है। इन पहलों से बालक अपने घर के सदस्यों के साथ सांस्कृतिक धरोहर साझा कर पाता है और घर तथा स्कूल में संतुलित समर्थन प्राप्त होता है (सिंह, राम अवतार, और प्रभात शुक्ला, जनवरी 2026)।

सर्वांगीण विकास एवं संस्कार पीरियड

NEP 2020 केवल शारीरिक और बौद्धिक विकास पर ही नहीं, बल्कि नैतिक-आध्यात्मिक विकास पर भी समान रूप से जोर देती है। **SESM** में एक साप्ताहिक संस्कार पीरियड शामिल किया जा सकता है, जिसमें रामायण-महाभारत की प्रेरक कथाएँ, महापुरुषों के जीवन के नैतिक सबक, योग अभ्यास और ध्यान सिखाया जाए। यह शुरुआती स्तर से नैतिक समझ को सींचेगा। विकासात्मक मनोविज्ञान कहती है कि **6** वर्ष की आयु तक मस्तिष्क का **85%** विकास हो चुका होता है, इसलिए प्रारंभिक वर्षों में नैतिक शिक्षा अत्यंत प्रभावी होती है। संस्कार पीरियड से शिक्षक-छात्र वार्तालाप हो सकता है, जहां बच्चे अपनी दुविधाओं पर चर्चा कर सकें और सही मार्गदर्शन पाएं। उदाहरणतः कहानी सुनाकर शिक्षा देना या वर्ग में छोटे-छोटे नैतिक प्रश्न रखकर विमर्श करवाना, दोनों ही तरीकों से चरित्र निर्माण में मदद मिलती है। ऐसी शिक्षण परम्परा से छात्र मात्र परीक्षार्थी नहीं, बल्कि एक संवेदनशील नागरिक बनकर विकसित होते हैं।

चुनौतियाँ एवं समाधान

संस्कार-संपन्न मॉडल को साकार करने में चुनौतियाँ भी होंगी। सबसे बड़ी चुनौती शिक्षकों का प्रशिक्षण है। मौजूदा शिक्षक-शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भारतीय दर्शन, नैतिक मूल्यों और भावनात्मक शिक्षा को पर्याप्त स्थान नहीं मिला है। समाधान के लिए **B.Ed.** और अन्य प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में संस्कारात्मक शिक्षा के मॉड्यूल शामिल करने होंगे। इसके अतिरिक्त, कुछ ग्रामीण या कम संसाधन वाले स्कूलों में आधारभूत सुविधाओं की कमी हो सकती है। इसे दूर करने के लिए स्थानीय समुदाय, स्वयंसेवी संस्थाएँ और अभिभावक सहयोगी बन सकते हैं। उदाहरणतः शिक्षा विभाग स्थानीय स्तर पर "शिक्षक ट्रेनिंग वर्कशॉप" आयोजित कर सकता है, और **CSR/NGO** स्टेकहोल्डर्स स्कूलों में संसाधन (पौधे, साफ-सफाई उपकरण, आदि) मुहैया करा सकते हैं। तकनीकी

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 10, June 2026 Impact Factor: 8.2

संसाधनों (इंटरनेट, लैब इत्यादि) की कमी हो तो डिजिटल शिक्षा मंचों और साझा प्रयोगशालाओं की व्यवस्था की जा सकती है। सबसे महत्वपूर्ण, इस मॉडल को सफल बनाने के लिए प्रशासनिक इच्छाशक्ति चाहिए; सरकार को ऐसे विद्यालयों को पुरस्कार देकर अथवा ब्रांडिंग कर के प्रोत्साहन देना होगा, जिससे और स्कूल भी प्रेरित हों।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 वास्तव में भारतीय शिक्षा व्यवस्था के पुनरुत्थान की दिशा में ऐतिहासिक पहल है। SESM जैसे मॉडल NEP की इस भावना को धरातल पर उतारते हैं। इस अध्ययन में प्रस्तावित संस्कार-संपन्न विद्यालय मॉडल भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक शैक्षिक नवाचारों का संगम है। इस मॉडल के अंतर्गत जहाँ ज्ञानवान नागरिक तैयार होंगे, वहीं उनमें संस्कार, अनुशासन और उत्तरदायित्व की भावना भी उत्पन्न होगी। विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए ये पाँच स्तंभ बल प्रदान करेंगे। यदि योजना के अनुसार इन गतिविधियों को विद्यालय स्तर पर लागू किया जाए, तो न केवल छात्र जीवन मूल्यों से संपन्न होंगे, बल्कि वे आत्मनिर्भर और समाज जागरूक नागरिक भी बनेंगे। यह मॉडल भारत को फिर से वैश्विक शैक्षिक मानचित्र पर 'आध्यात्मिक अधिष्ठाता' के रूप में प्रस्तुत कर सकता है, जिस दृष्टिकोण से शिक्षा का उद्देश्य न केवल अर्थव्यवस्था बल्कि समाज के नैतिक विकास को भी संरक्षित किया जाता है।

संदर्भ

- (GCNF), G. C. (2024). *The 2024 Global Child Nutrition Forum - Why Japan? 2024*. Retrieved 2026, from https://gcnf.org/the-2024-global-child-nutrition-forum-why-japan/
- *21वीं सदी की शिक्षा के लिए साझेदारी फ्रेमवर्क और संसाधन*. (n.d.). Retrieved from www.bettelleforkids.org.
- AICTE. (2018). *Model Curriculum for Undergraduate Degree Courses in Engineering & Technology.* AICTE.

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 10, June 2026
Impact Factor: 8.2

- CBSE. (2021). *Value Education Kit: A Teacher's Handbook.* delhi: CBSE Publication.
- Finland, F. T. (2021). *Free Meals for All - School Food in Finland. 2021*. Retrieved 2026, from https://toolbox.finland.fi/
- NCTE. (2023).
- Prasad, C. (2025). *Beyond the Bell: Preparing Students for Life.* Rupa Publications.
- Siddharthan, R. (2022). *Philosophical Foundations of Education: Lessons for India. .* Cambridge: Cambridge Scholars Publishing.
- UNESCO. (2024). *Digital learning and transfromation of education.*
- UNESCO. (2019). *Education for Sustainable Development Goals: Learning Objectives. United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization.* UNESCO.
- गुप्ता, आयुष, और जितेंद्र प्रताप. (फरवरी 2026). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा: एक व्यापक अध्ययन. *International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT)* , पृ. 130-159. https://www.ijcrt.org/papers/IJCRT2602180.pdf
- जे.डब्लू.थॉमस. (2000). प्रोजेक्ट आधारित शिक्षा.
- पाण्डेय, अ. क. (अक्टूबर-दिसंबर 2025). भारतीय ज्ञान परंपरा एवं गुणवत्ता युक्त शिक्षा- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विशेष संदर्भ में. *The Asian Thinker* , पृ. 602-615.
- भटनागर, भाग्य, और निकिता यादव. (अप्रैल 2025). भारत में समावेशी शिक्षा पर भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभाव एवं महत्व का अध्ययन. *Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal* , पृ. 127-134. https://gisrrj.com/paper/GISRRJ258314.pdf

- (2024). *भारत सरकार,शिक्षा मंत्रालय .*
- (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा निति.* भारत सरकार.
- शर्मा, आ. (2023). नैतिक शिक्षा: एक सैद्धांतिक विवेचन. *शैक्षणिक अनुसंधान पत्रिका* , 45-60.
- सिंह, क. व. (सितंबर 2023). विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के दृष्टिगत नयी शिक्षा नीति का आलोचनात्मक विश्लेषण. *International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT)* , b531-b535. https://ijcrt.org/papers/IJCRT2309185.pdf
- सिंह, राम अवतार, और प्रभात शुक्ला. (जनवरी 2026). माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन. *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR)* , c796-c803. https://www.jetir.org/papers/JETIR2601300.pdf
- हसन, ज. (2023). some moral issues in school education in india. *international journal for multidisciplinary research (IJFMR)* .
- Shokuiku – How Japan Leverages School Meals as a ‘Living Textbook’ for Lifelong Healthy Eating. Global Child Nutrition Foundation, 26 June 2024.
- शेखर कुमार .(संपादक) Innovative School Lunch Programs Around the World. Learning Buddies Network, 15 Aug 2024.
- Brookings Institution. Singapore’s educational reforms toward holistic outcomes (Dennis Kwek et al., 2023).
- Times of India. CBSE rolls out parenting calendar 2026-27 to institutionalise parent-school engagement under NEP 2020 vision, 30 Apr 2026.